बी०ए० पार्ट - I, पेपर - हिंदी रचना

दिनांक - 01/05/2020

डॉ० चन्दा (Subs) कुमारी
गेस्ट टीचर
हिन्दी विभाग
रोहतास महिला महाविद्यालय, सासाराम रोहतास

Scanned with CamScanner

शीर्षक - भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग है

भक्ति काल का हिन्दी साहित्य में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी समयावधि 1375 ई० से 1700 ई० तक मानी जाती है। जिसमें इसकी अवधि 1318 ई० से 1643 ई० तक भी मानी जाती है। आदिकाल के बाद आने इस युग को पूर्व मध्यकाल भी कहा जाता है। इस काल के उदय के बारे में सबसे पहले जॉर्ज ग्रियर्सन ने मत व्यक्त किया और इसे "ईसाइयत की देन" मानते हैं। इसी कारण तारा चंद ने भक्तिकाल को अरबों की देन मानी है। इस काल को विभिन्न विद्वानों ने अलग - अलग नामों से वर्णन किया है जैसे, श्याम सुन्दर दास ने स्वर्णयुग, आचार्य राम चंद्र शुक्ल ने भक्तिकाल एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक जागरण काल कहा जाता है। सम्पूर्ण साहित्य के श्रेष्ठ कवि और उत्तम रचनाएं इसी काल में प्राप्त होती है।

भक्तिकाल को इस कारण स्वर्णयुग भी कहा जाता है कि इस युग में ऊंच - नीच, जाति - पाती का कोई भेदभाव नहीं रह गया था, इस युग का एक मात्र सूत्र :-

जाति - पांति पूछे नहिं कोई,
हरि को भजै सो हरि का होई॥

पूर्वमध्यकाल या भक्ति काल के कवि मुख्यतः दो काव्य धाराओं में विभाजित हो गए :-

(1) निर्गुण काव्य धारा
- संत काव्य धारा
- सूफी काव्य धारा

(2) सगुण काव्य धारा
- राम भक्ति काव्य धारा
- कृष्ण भक्ति काव्य धारा

Scanned with CamScanner

निर्गुण काव्य धारा के अन्तर्गत कवि निर्गुण अथवा निराकार रूप की आरा-धना करते थे। निर्गुण काव्य धारा के अंतर्गत संत काव्य धारा के प्रमुख कवि जो निम्न है :-

कबीरदास :- कबीर संत परम्परा के प्रमुख और प्रतिनिधि कवि है। इनके जन्म के विषय में प्रामाणित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। जनश्रुतियों के अनुसार कबीर का जन्म 1398 ई० मे और मृत्यु 1518 ई० में हुआ है। कबीर नीरू और नीमा नामक जुलाहा दम्पति को तालाब के किनारे मिले थे। इनके द्वारा ही इनका पालन पोषण किया गया था। कबीर के गुरु रामानन्द थे। कबीर पढ़े लिखे नहीं थे, इनके शिष्यों द्वारा इनकी वाणी को संजोकर पुस्तक का रूप दिया गया। इनकी प्रमुख बीजक नाम से जानी जाती है। कबीर ने जीवन भर धार्मिक तथा सामाजिक अंधविश्वासों का तीखा विरोध किया तथा सामाजिक बुराईयों तथा सामाजिक कुरितीयों का विरोध किया।

रामानन्द :- रामानन्द जी के जीवन काल, निधन काल, जीवन चरित आदि के संबंध में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। इनकी शिक्षा-दीक्षा काशी मे हुआ। ये रामानुजाचार्य के शिष्य है।

नामदेव :- सतारा जिले के नरसी बैनी गांव में सन 1267 ई० मे इनका जन्म हुआ था। इनके गुरु का नाम संत विसोवा खेचर था। नामदेव मराठी और हिन्दी दोनों भाषाओं में भजन गाते थे। इन्होंने हिन्दू और मुसलमान की मिथ्यावादी रूढ़ियों का विरोध किया।

Scanned with CamScanner

निर्गुण काव्य की विशेषता :-

(1) निजी धार्मिक सिद्धांतों का अभाव :- संत साहित्य में निजी सिद्धांतों का अभाव है, ब्रह्म, जीव, माया, संसार आदि के सम्बन्ध में इन कवियों ने जिन बातों का वर्णन किया है, वे पूर्ववर्ती आचार्यों और कवियों की देन है।

(2) आचार पक्ष की प्रधानता :- संत कवियों ने अपने काव्यों में असंयम, अनाचार और आडम्बर का विरोध किया है, इनमें खानपान, आचार-विचार, शुद्धता और सदाचार को विशेष महत्व दिया गया है, इनकी सहज साधना और सहज आचारों को पालन करने की साधना है, इन्हीं आचारों के आधार पर अनेक पंथ बने हैं, आज भारत में नानक, कबीर पंथ, दादू पंथ आदि बने हैं, इनमें मौलिक एकता है।

(3) गुरु के प्रति श्रद्धा :- संत कवियों ने अपनी रचनाओं में गुरु को सबसे ऊंचा स्थान दिया है।

(4) निम्न जाति के कवि :- निर्गुण काव्यधारा के अधिकांश कवि निम्न जाति में उत्पन्न हुए, समाज के निचले स्तर की जातियों में जन्म लेने के कारण इन्हें ऊंच-नीच सम्बन्धी कटु अनुभव था, इन कवियों में कबीर जुलाहा, रैदास चमार, सेन नाई, दादू धुनिया, सदन कसाई तथा नाभा दास डोम के घर में जन्मे थे।

(5) सामाजिक कुरीतियों के विरोधी :- इन कवियों ने एक स्वर से जाति-पांति एवं ऊंच नीच आदि कुरीतियों का आपस फैलाने पर विरोध किया है।

Scanned with CamScanner

समाज के निचले स्तर से आने के कारण इन कवियों के लिए ज्ञान प्राप्ति के दरवाजे बंद थे। ज्ञान की प्यास बुझाने हेतु इन कवियों ने अनेक दरवाजे खटखटाया किन्तु कोई भी पंडित या महात्मा इन्हें शिक्षा देने के लिए तैयार नहीं थे।

(6) शिक्षा की कमी :- संत कवि अधिकांश पढ़े-लिखे नहीं थे। कबीर के सम्बंध में तो कहा जाता है कि

मसि कागद छूओ नहीं, कलम गहि नहिं हाथ।
चारिउ जुग को महातम, मुखहिं जनाई बात।

इनके काव्य में मन की गुनी, कान की सुनी और आँख की देखी बातों की चर्चा है।

(7) काव्य रूप :- निर्गुण धारा का समस्त साहित्य मुक्तक रूप में लिखा गया है। इनमें प्रबंध का अभाव है। अधिकांश रचनाएँ दोहे एवं पद में लिखी गई है।

Scanned with CamScanner